प्रजातंत्र में राजनीतिक दलों के कार्य या भूमिका

प्रदोष कुमार

लोकमत का निर्माण वर्तमान समय में राज्य संबंधी विषय बहुत अधिक जटिल और व्यापक होते हैं और साधारण व्यक्ति के लिए इस प्रकार के विचार विषय का चुनाव और से समझ सकना संभव नहीं होता है।ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल सर्वजनिक समस्याओं को जनता के सम्मुख इस रूप में प्रस्तुत करते हैं कि साधारण जनता उन्हें समझ सके जब विभिन्न राजनीतिक दल समस्याओं के संबंध में अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते हैं तो साधारण जनता इस समस्याओं को भली प्रकार समझकर निर्णय कर सकती है और लोकमत का निर्माण हो सकता है। **ब्राइस** के शब्दों में," **लोकमत को प्रशिक्षित करने उसके निर्माण और अभिव्यक्ति में राजनीतिक दलों के द्वारा अत्यधिक महत्वपूर्ण किया जाता है** एक अन्य स्थान **प्राइस** लिखते हैं कि **जिस प्रकार ज्वार भाटा महासागर के जल को ताजा और तरंगित रखता है उसी प्रकार राजनीतिक दल राष्ट्र के दिमाग को ताजा और तरंगित रखते ।**

2. चुनाव का संचालन मताधिकार बहुत अधिक सीमित था और निर्वाचक ओं की संख्या कम थी तब स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़े जा सकते हैं। लेकिन जब व्यस्क मताधिकार के प्रचलन के कारण स्वतंत्र रूप से लड़ना लगभग संभव असंभव हो गया ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल अपने दल की ओर से उम्मीदवारों को चुनावी मैदान में लाते हैं। उनके पक्ष में प्रचार प्रसार करते हैं। चुनाव के समय होने वाली भारी भरकम खर्च को राजनीतिक दल द्वारा ही किया जाता है यदि राजनीतिक दल ना हो तो आज के विशाल लोकतंत्रात्मक राज्यों में निर्वाचन का संचालन लगभग असंभव भी हो जाए चुनावों के संचालन में राजनीतिक दलों का महत्व स्पष्ट करते हुए **भारी भरकम खर्च को राजनीतिक दल द्वारा ही किया जाता है ।यदि राजनीतिक दल ना हो तो आज के विशाल लोकतंत्रात्मक राज्यों में निर्वाचन**

Scanned with CamScanner

का संचालन लगभग असंभव भी हो जाए चुनावों के संचालन में राजनीतिक दलों का महत्व स्पष्ट करते हुए डॉक्टर फाइनर ने लिखा **ने लिखा है कि राजनीतिक दलों के बिना निर्वाचक या तो नितांत असहाय हो जाएंगे या उनके द्वारा असंभव नीतियों को अपनाकर राजनीतिक यंत्र को** राजनीतिक दलों के बिना निर्वाचक या तो नितांत असहाय हो जाएंगे या उनके द्वारा असंभव नीतियों को अपनाकर राजनीतिक यंत्र को नष्ट कर दिया जाएगा।

3. सरकार का निर्माण निर्वाचन के बाद राजनीतिक दलों के द्वारा ही सरकार का निर्माण किया जाता है। अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था में राष्ट्रपति अपने विचारों से सहमत व्यक्तियों की मंत्रिपरिषद का निर्माण कर शासन का संचालन करता है। संसदात्मक शासन व्यवस्था में जिस राजनीतिक दल को व्यवस्थापिका में बहुमत प्राप्त हो उसके प्रधान द्वारा मंत्री परिषद का निर्माण करते हुए शासन का संचालन किया जाता है ।मंत्री परिषद व्यवस्थापिका में अपने राजनीतिक दल के समर्थन के आधार पर ही शासन करती है इस प्रकार संसदात्मक और अध्यक्षात्मक दोनों ही प्रकार की शासन व्यवस्था में सरकार का निर्माण और शासन व्यवस्था का संचालन राजनीतिक दलों के आधार पर ही किया जाता है। राजनीतिक दलों के अभाव में तो व्यवस्थापिका के सदस्यों द्वारा **अपना अपनी अपनी डफली अपना अपना राग** का रुख अपनाया जा सकता है जिसके कारण शासन संभव ही नहीं होगा। इस संबंध में **ब्राइस ने** ठीक ही कहा है कि"**आअनियंत्रित प्रतिनिधियों द्वारा शासन व्यवस्था के संचालन का प्रयत्न वैसा ही है जैसे कि कंपनी के के अविज्ञ साझेदारो के मतों द्वारा रेलमार्गों का प्रबंध किया जाय अथवा किसी जहाज के यात्रियों के मतों द्वारा जहाज का मार्ग निश्चित किया जाय।"**

4.शासन सत्ता को मर्यादित करना- शासन व्यवस्था में बहुसंख्यक राजनीतिक दल के साथ ही साथ अल्पसंख्यक राजनीतिक दल या विरोधी दल भी बहुत अधिक संघ महत्व रखते हैं यदि बहुसंख्यक राजनीतिक दल शासन सत्ता के संचालन का

Scanned with CamScanner

कार्य करता है तो अल्पसंख्याक दाल विरोधी दल के रूप में कार्य करते हुए शासन शक्ति को सीमित रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं संगठित विरोधी दल के अभाव में शासक दल अधिनायक वादी रुख अपना सकता है।

5. सरकार के विभिन्न विभागों में समन्वय और सामंजस्य। सरकार के द्वारा उसी समय ठीक प्रकार से कार्य किया जा सकता है जबकि शासन के विभिन्न अंग परस्पर सहयोग करें और यह सहयोग राजनीतिक दलों द्वारा ही संभव होता है संसदीय शासन में तो सामान्यत या कानून निर्माण और प्रशासन की सख्ती एक ही राजनीतिक दल के हाथ में होती है और दलिया अनुशासन के कारण कार्यपालिका व्यवस्थापिका से अपनी इच्छा अनुसार कानूनों का निर्माण करवा सकती है अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था वाले संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में जहां पर की व्यवस्थापिका और कार्यपालिका शासन के दो बिल्कुल पृथक अंग होते हैं। राजनीतिक दलों की सहायता के बिना शासन का भली प्रकार संचालन संभव हो ही नहीं सकता अमेरिका में दलीय व्यवस्था ने ही व्यवस्थापिका और कार्यपालिका के बीच सहयोग स्थापित कर संविधान की कमी को दूर कर दिया है।

6. राजनीतिक चेतना का प्रसार राजनीतिक दल नागरिक चेतना और राजनीतिक शिक्षा के अत्यंत महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करते हैं ।सार्वजनिक समस्याओं समस्याएं के संबंध में किए गए निरंतर प्रचार और वाद-विवाद के आधार पर वे सामान्य जनता में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रति रुचि जागृत करते हैं। उनका उद्देश्य अपनी लोकप्रियता बढ़ाकर शासन शक्ति पर अधिकार करना होता है इसलिए वे प्रेस, प्लेटफॉर्म और अन्य साधनों के आधार पर अपनी विचारधारा का अधिक से अधिक प्रचार करते हैं और उदासीन मतदाताओं को भी सार्वजनिक जीवन का कुछ ज्ञान तो प्रदान कर ही देते हैं **लावेल** ने ठीक ही कहा है कि **राजनीतिक दल राजनीतिक विचारों के दलाल के रूप में कार्य करते हैं।**

Scanned with CamScanner

7. जनता और शासन के बीच संबंध : प्रजातंत्र का आधारभूत सिद्धांत जनता और शासन के बीच संपर्क बनाए रखना और इस प्रकार का संपर्क स्थापित करने का सबसे बड़ा साधन राजनीतिक दल ही है। प्रजातंत्र में जिस दल के हाथ में शासन शक्ति होती है उसके सदस्य जनता के मध्य सरकारी नीति का प्रचार करते हैं और जनमत को अपने पक्ष में रखने का प्रयत्न करते हैं। विरोधी दल शासन के दोषों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करते हैं इसके अतिरिक्त यह सभी दल जनता की कठिनाइयों एवं शिकायतों को शासन के विविध अधिकारियों तक पहुंचा कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करते हैं ।

इस प्रकार राजनीतिक दलों द्वारा शासन व्यवस्था से संबंधित सभी प्रकार के कार्य किए जा सकते हैं इस संबंध में प्रोफेसर मरियम अपनी पुस्तक अमेरिकन पार्टी सिस्टम में लिखते हैं कि राजनीतिक दलों का आकार अधिकारी वर्ग का चुनाव करना लोक नीति का निर्धारण करना सरकार को चलाना और उसकी आलोचना करना राजनीतिक शिक्षण एवं व्यक्ति और सरकार के बीच मध्यस्थता का कार्य करना है वस्तुतः राजनीतिक दल प्रजातांत्रिक शासन की दूरी के रूप में कार्य करते हैं और प्रजातंत्र शासन के संचालन के लिए राजनीतिक दलों का अस्तित्व नितांत आवश्यक है प्रजातंत्र में राजनीतिक दलों के महत्व को स्पष्ट करते हुए हूबर के शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रजातंत्र यंत्र के संचालन में राजनीतिक दल तेल के तुल्य है।

Scanned with CamScanner